के सोने के सिक्के की मार्केट में दस गुना कीमत मिलती है। जो एक हजार का सिक्का आप बना रहे हैं वह इन्फ्लेशन रोकने की भी अच्छी तरकीब है। हजार रुपये का रेडियो नहीं लिया, सिक्का ही रख लिया, खूबसूरती के लिए रख लिया।

और भी सजेशन्स मुझे देने हैं।

श्री उपसभापति : अब आप लंच के बाद सजेशन्स दें

The House stands adjourned till 3.00P.M. today.

The House then adjourned for lunch at four minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at one minute past three of the clock.

[Mr. Deputy Chariman in the chair]

THE INDIAN COINAGE (AMENDMENT) BILL, 1975—Contd.

श्री सिकन्दर अली वज्द : आली जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, यह जो हमारे यहां हजार रुपये का क्वायन ढल रहा हैउसके बारे में मैं फाइनेंस मिनिस्टर साहब और फाइनेंस के महकमे को इस तरफ मुतवज्जह करना चाहता हूं कि कम्पलसरी सेविंग्स के सिलसिले में जहां और इन्तजाम किये जा रहे हैं वहां अगर आप यह सिक्का सोने का ढाल दें तो हम जरूर इस कम्पलसरी सेविंग्स में शरकत करेंगे। उसमें शर्त सिर्फ इतनी है कि जैसा हम कह रहे हैं एक खूबसूरत और उम्दा क्वायन हमको मिलना चाहिए। अभी कुछ दोस्तों ने पूछा था कि क्वायन पर शेर कैसे लिखा जाता था? अकबर ने जब इलाहाबाद को फतेह किया था तो इस इलाहाबाद के क्वायन्स पर यह शेर लिखा गया था :

हमेशा चून जरें खुर्शीदो माह रायज बाद
ब शर्वो शर्कें जहान सिक्कए अलाहाबाद

यानी हमेशा चांद और सूरज की तरह यह इलाहाबाद का सिक्का चमकता रहे और रिवाज पाता रहे। और वह अभी तक चमक रहा है चूंकि यह बीमेन्स इयर है इसलिये इस सिलसिले में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। रोम में कुछ मेडिल मिन्ट हुए हैं और यहां आये हैं। मालूम नहीं, फाइनेंस मिनिस्टर साहब ने और फाइनेंस डिपार्टमेन्ट वालों ने उनको देखा है या नहीं। उनमें जहां और लेडीज की तस्वीरों का इन्तखाब हुआ है वहां इन्दिरा जी की तस्वीर का भी इन्तखाब हुआ है। जो एक मेडिल (Bronze) ब्रौंज का है वह तो बहुत ही आला दर्जे का है। उसकी जो खूबसूरती और टेक्नीक है, जो उसकी नफासत है वह हमारे क्वायन बनाने वालों को दिखाना चाहिए। मैं चाहता हूं कि उसे आप देखें कि उसमें एक-एक बात कैसे दिखायी गयी है। ऐसा ही एक निकिल का मेडिल है। छोटे से क्वायन में भी तस्वीर साफ आई है। खूबसूरती के लिए किसी क्वायन का बड़ा होना ही काफी नहीं है, उसके लिए आर्टिस्टिक अप्रोच होना चाहिए। क्वायन बनाने में स्कल्पचर, पेन्टर और इंग्रेवर तीनों के आर्ट की जरूरत होती है। मैं जब पार्लियामेन्ट में आया तो एक बहुत पुराने पार्लियामेन्टेरियन साहब से मिला। जैसे राज्य सभा में राजू साहब हैं। मैंने कहा कि आप तो बहुत पापुलर थे, इसका क्या राज है? तो उन्होंने जवाब दिया कि जिस सब्जेक्ट को तुम जानते हो उस पर पार्लियामेन्ट में कभी बात न करो। लोग बहुत परेशान होते हैं कि यह किस तरह की बातें कह रहा है, वह उनकी समझ में नहीं आती। तुम जो सब्जेक्ट नहीं जानते उसके बारे में जोर से बात करो तो लोग यह समझेंगे कि हमसे तो यह कम ही जानता है। लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी और यहां उर्दू के बारे में तकरीरें की हैं। चूंकि अब अपने हाथ में हजार रुपये का सोने का सिक्का आने वाला है इसलिये मैं यह सब कह रहा हूं। मैं तो कांसे और चांदी के क्वायन जमा करता हूं। अभी हमारे पार्लियामेन्ट के मिनिस्टर साहब यह कह गये हैं कि वह एक अच्छा बिल ला रहे हैं। उस वक्त तक मैं आपके सामने कुछ अपने मालूमात का इजहार करता रहूं ताकि ज्यों ही बिल आ जाए मैं अशर्फियां और चांदी के सिक्कों का सन्दूक बन्द कर दूं और दूसरे सिक्कों का यहां पर जिक्र शुरू हो जाए।

जहांगीर के सोने के सिक्के में नूरजहां का जिक्र यूं आया है :

[श्री सिकन्दर अली वज्द]

बहुक्मे शाहे जहांगीर यापत सद जेवर
बनामे नूरजहान बादशाह बेगम जर

यानी, जहांगीर बादशाह के हुक्म और नूरजहां बादशाह बेगम के नाम से सोने को खूबसूरती नसीब हुई है ।

औरंगजेब के सिक्के पर यह शेर है :

सिक्का जद दर जहा चो बदरे मुनीर
शाह औरंगजेब आलमगीर

यह चांदी का सिक्का था । चूंकि औरंगजेब बहुत मोहतात आदमी था । पता नहीं शायर को कितना इनाम दिया होगा । औरंगजेब के सोने के सिक्के में 'बदरे मुनीर' की बजाए 'मेहरे मुनीर' लिखा है । इस तरह उसने एक शेर से दो काम निकाल लिए । रणजीतसिंह के सिक्के बहुत खूबसूरत थे । काश्मीर और बंगाल के बादशाहों के सिक्के भी बहुत खूबसूरत थे । पार्लियामेन्ट के मैम्बरों के लिए एक ऐग्जीबिशन हमारे सिक्कों का होना चाहिए । किसी ने कहा था कि :

Sometimes we have to educate our educators : sometimes we have to lead our leaders and sometimes we have to educate our MPs also.

इसलिए यह ऐग्जीबीशन बहुत जरूरी है । क्योंकि हर चीज को हर शख्स नहीं जानता । एम पीज यह एग्जीबीशन देखेंगे तो मालूम होगा कि हमारे मुल्क में कैसे खूबसूरत सिक्के बनते थे ।

हिस्टोरियन्स, तारीख लिखने वाले, झूठ बोल सकते हैं लेकिन सिक्के झूठ नहीं बोलते । हम ऐसे सिक्के बनायें जिनमें हमारे आदर्शों की तस्वीर हो, हमारी तमन्नाओं की ताबीर हो । हमारे सिक्के बेजान न हों बल्कि शानदार, जानदार और खूबसूरत हों । शुक्रिया ।

श्री जगदीश जोशी (मध्य प्रदेश) : सभापति जी, माननीय मंत्री महोदय ने यह विधेयक हजार रुपये तक के सिक्के ढालने की मंजूरी लेने के लिए सदन में लाये हैं । अभी तक मंजूरी थी कि सौ रुपये से बड़े सिक्के हमारे सिक्के बनाने के कारखाने में नहीं ढाल जा सकते । इस कानून के बनने के बाद हजार रुपये के सिक्के हम ढाल सकने की हैसियत में हो जायेंगे ।

जहां तक सिक्कों की तवारीख की बात है, अभी वज्द साहब ने काफी तफसील में सिक्कों का इतिहास पेश किया है । एक चीज मैं बताना चाहता था कि सिक्के जो हमारे यहां चल रहे थे, अभी तक चल रहे हैं और काफी मात्रा में, वह उन धातुओं के हैं जिन धातुओं को आम तौर पर हम विदेशी मुद्रा देकर खरीदते हैं । जस्ते के सिक्के चलते रहे और तांबे के सिक्के भी चलते रहे । पीतल के सिक्के भी चले और पीतल, जस्ता, तांबा ये ऐसी धातुयें रही हैं जिनके लिए काफी रकम हमें विदेशी मुद्रा की खर्च करनी पड़ी । नतीजा क्या होता था कि जब कभी ताम्बे की कमी पड़ी तो लोगों ने पुराने पैसों को इकट्ठा करके उससे ताम्बे का काम करना शुरू किया । मोहरें किसी जमाने में लोग रखते थे । मोहर केवल सिक्का ही नहीं होती थी वरन् सोने की भी होती थी । जरूरत पड़ने पर मोहरों को ढलवा कर जेवर बनवा कर अपने घर का कोई खास काम, जैसे शादी ब्याह कर लेते थे और उन मोहरों को बेच कर या गिरवी रख कर भी अपना काम कर लिया करते थे । मोहरों की अपनी कीमत केवल इसलिये नहीं होती थी कि मोहर का दाम क्या है बल्कि इसलिये होती थी कि मोहर सोने की है और सोने की दुनिया भर में अपनी कीमत है जो अलग-अलग जमाने में अलग-अलग करवटें लिया करती है । सोने का भाव देश-देश में अलग-अलग हुआ करता है । सरकारी अलग होता है और गैर-सरकारी अलग होता है । शायद सोने का सरकारी भाव बहुत कम होगा लेकिन गैर-सरकारी भाव जो अखबारों में मिलता है वह बिल्कुल आसमान को छू रहा है । यही एक धातु है जिसकी दुनिया में ज्यादा कीमत है और जिसका इन्सान की जिन्दगी से कोई तालमेल नहीं है । सारी दुनिया इस पीली धातु पर टिकी हुई है । सारी दुनिया का लेन-देन इसी धातु से है । चाहे वह सोवियत रूस हो, चाहे वह अमेरिका हो, चाहे वह कम्युनिस्ट देश हो या गैर-कम्युनिस्ट देश हो, सब का सोना ही मानदण्ड है । यह विचित्र बात है । मैं चाहता हूं कि हमारी सरकार

जरा इस बात को गम्भीरता से सोचें कि सोना जो युग-युगों से सामन्ती और शोषण की प्रक्रिया का प्रतीक रहा, सोना जिसने अनेकों युद्ध कराये, सोना जो विषमता का केन्द्र रहा, सोना जो दुनिया के थोड़े से सह हिस्से में है यह दुनियां के व्यापार, दुनिया की तिजारत की धुरी क्यों बन गया है ? आखिर धुरी को हम क्यों काट नहीं सकते ? आज दुनिया का सोना कहां है ? जो गोरी चमड़ी वाले देश हैं उन सब के पास सोने का भण्डार भरा पड़ा है या थोड़े बहुत लोगों की नजर जो फिसल रही है वह पैट्रो, डालर वाले मुल्कों पर फिसल रही है। क्योंकि अब तेल महंगा हो गया है इसलिये सोना वहां अरब देशों में जा रहा है । इस तरह से सोना घूमता रहता है । जो कहते हैं कि लक्ष्मी चलायमान होती है तो उनको कहना चाहिये कि सोना भी चलायमान है । स्मृति में लिखा हुआ है कंचन और कामिनी ऐसी वस्तुएं हैं जिनको कहीं से ग्रहण किया जा सकता है । यह पुरानी किवदंती है । इससे मैं पूरी तरह सहमत नहीं हूं । कामिनी की मर्यादा रहेगी ही और रहनी चाहिये लेकिन कंचन की मर्यादा को खत्म करने का कोई न कोई रास्ता हमको नये ढंग से सोचना पड़ेगा ।

श्री ब्रह्मानन्द पंडा : कामिनी और कंचन दोनों का छोड़ना होगा ।

श्री जगदीश जोशी : आप छोड़ चुके हैं इसलिये आपके लिये आसान है लेकिन हमारे लिये बहुत मुश्किल है । मेरा कहना यह है कि सोना खास व्यापार की तिजारत की धुरी है । डालर की कीमत क्यों है ? क्योंकि सोना उसके साथ जुड़ा हुआ है । पौंड क्यों गिर रहा है क्योंकि विलायत के खजाने में सोना घट रहा है । रूबल की कीमत है क्योंकि वहां सोना है। हमारा रुपया क्यों दीन-हीन है क्योंकि यहां सोना कम है । यहां पर जो सोने की खादानें हैं उनमें से सोना कम निकल रहा है । सोना भले ही हमारे देश के अन्दर हो लेकिन जब तक खादान में सोना न हो तब तक सोने का कोई मूल्य नहीं होता ।

मेरा यह कहना है कि जैसे आदिकाल में एक बार्टर पद्धति थी, चीजों के आदान-प्रदान की तो उस समय राष्ट्रीय सम्पत्ति का अनुमान उसी से हो सकता था । आज राष्ट्रीय सम्पत्ति का अनुमान हमलोग सोने में लगाया करते हैं । इसलिए मेरा यह कहना है कि आदमी के श्रम और मेहनत के घंटों को जोड़कर किसी मुल्क की हैसियत का अंदाजा लगाया जाना चाहिए । लेकिन आज विडम्बना यह है कि हिन्दुस्तान में 60 करोड़ लोग रहते हैं । इन 60 करोड़ लोगों में से 30 करोड़ लोग बालिग हैं । 30 करोड़ आदमियों की एक दिन की मजदूरी का हिसाब लगाया जाये तो मालूम होगा कि दुनिया के अन्य किसी भी मुल्क की राष्ट्रीय सम्पत्ति से हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सम्पत्ति कहीं अधिक है । लेकिन जिस प्रकार से सारी दुनिया में कुछ लोग किसी जमाने में हथियारों के बल पर आगे रहे जिसका नतीजा यह हुआ कि सोना, शक्ति, हथियार और अन्य सुविधाएं कुछ राष्ट्रों तक ही सीमित रह गई । आप हजार रुपये का सिक्का बनाने जा रहे हैं, लेकिन माननीय मंत्री जी ने इस बात को स्पष्ट नहीं किया है कि यह सिक्का किस धातु का बनेगा । इस संबंध में मैं यह बात भी कहना चाहता हूं कि यह सिक्का किसी ऐसी धातु का न बनाया जाये जो दुर्लभ धातु हो या जिस धातु के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता हो । जहां तक उसकी सुन्दरता, गतिशीलता और चमक का सवाल है, यह चीज कलाकारों, नक्शा बनाने वालों और अन्य विशेषज्ञों के सोचने की बात है । बहरहाल, मंत्री महोदय को इस पर गौर करना होगा कि यह किस धातु का बनाया जाये । वह सिक्का लोहे का बने या एल्युमिनियम का बने या किसी अन्य धातु का बने, लेकिन यह दुनिया की नवीन सभ्यता की धुरी बन सके, इस बात का ध्यान मंत्री महोदय को अवश्य रखना चाहिए, क्योंकि हम दुनिया में है एक ऐसी सभ्यता को वर्तमान बनाने जा रहे हैं जो सभ्यता सोने और चमकने वाले हथियारों के बल पर नहीं बनेगी बल्कि कुछ बुनियादी सिद्धान्तों के आधार पर बनेगी और हिन्दुस्तान ऐसी ही

[श्री जगदीश जोशी]

सभ्यता की रहनुमाई करना चाहता है । आज संसार में यह स्थिति है कि एक तरफ तो गरीब कंगाल लोग हैं और दूसरी तरफ मुट्ठी भर लोगों की सारी सुविधाएं मिली हुई हैं और इन मुट्ठी भर देशों के लोगों ने सारी दुनिया के इतिहास को अपने राष्ट्रीय इतिहास की सीमाओं में बांध दिया है । ऐसी स्थिति में अगर हमें दुनिया के अन्दर एक नई दुनिया का इतिहास बनाना है और जो दुनिया के दबे हुए लोग हैं, जैसे अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमेरिका के लोग, इन सबको साथ लेकर हमें आगे बढ़ना होगा और मूल रूप से सोने के प्रभाव को दुनिया से तोड़ना होगा और इस दृष्टि से सोने के प्रभाव को तोड़ने के लिए हमारा हजारिया सिक्का किस धातु का हो, यह मुख्य सवाल है । धातु का आधार क्या बनेगा मैं समझता हूं कि आज की स्थिति में धातु का आधार मनुष्य के श्रम के घंटे बनेंगे, धातु का आधार हमारे देश की राष्ट्रीय उत्पादन की क्षमता बनेगी मैं यह भी मानता हूं कि धातु को आधार बनाने के लिए कोई भी वैज्ञानिक सभीकरण आधुनिक ढंग से और आधुनिक दृष्टि से होना चाहिए । अब संसार में दकियानूसी दृष्टि की जरूरत नहीं है । समतावादी समाज की रचना करने के लिए हमें नये दृष्टिकोण को अपनाना होगा । इसलिए मेरा कहना है कि माननीय वित्त मन्त्राणी जी ने यह एक सार्थक विधेयक सदन के सामने रखा है । जो नया सिक्का बनेगा वह हमारे देश की नई सभ्यता का द्योतक होगा । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि यह नया हजारिया सिक्का पुराने ढर्रे के मुताबिक नहीं होगा और नई बोतल में पुरानी शराब वाली बात इसमें लागू नहीं होगी। यह सिक्का हमारी नई तहजीब का द्योतक होगा मैं समझता हूं कि इन बातों का खुलासा मंत्री जी करेंगी और जो बातें मैंने अभी कही हैं उन पर गौर करेंगी और इस संबंध में एक नया रास्ता ईजाद करेंगी और हम अपने मुल्क को और दुनिया को नई राह दिखा सकेंगे ।

वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती सुशीला रोहतगी): मान्यवर, सन् 1955 में मैंने एक कहानी पढ़ी थी "सिक्के की कहानी" । आज जब मैं घंटे-दो-घंटे से इस विधेयक पर चर्चा सुन रही थी तो मुझे ऐसा लगा कि इस विधेयक में तो आधा पेज भी मसाला नहीं था, लेकिन इस पर इतने सारगर्भित भाषण हो गये कि बहुत कम इस प्रकार के भाषण सुनने को मिलते हैं । चाहे कला हो, चाहे साहित्य हो या जीवन के दूसरे क्षेत्र हों, इन सारी चीजों की समीक्षा इन भाषणों में की गई । मैं समझती हूं कि आज की यह डिबेट इस दृष्टि से अन्य डिबेटों से भिन्न रही है । इसके अन्दर विद्वता, ज्ञान और अन्तर्राष्ट्रीय जगत का जिक्र भी किया गया और यह भी कहा गया कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में किस तरह से सोने के चलन के कारण असमानता पैदा हुई। इन सब बातों का जिक्र माननीय सदस्यों ने अपने भाषणों में किया । इसके साथ ही साथ मैं यह कह दूं कि इस सोने ने आज की वर्तमान स्थिति में बहुत से लोगों का सोना भी मुश्किल कर दिया है और घर-घर में घबराहट फैल गई है । इस तरह से आज सोना एक महत्व की चीज हो गई है, लेकिन मैं यहां पर यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि यह जो सिक्का बनाया जा रहा है, शायद सोने का न बने । शायद इस चीज से बहुत से लोगों को धक्का लग सकता है और इसका असर अलग-अलग दिमागों में अलग-अलग हो सकता है । लेकिन मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि इस बारे में अभी कोई निर्णय नहीं लिया गया है । हम और आप को मिलकर, जैसा कि अभी मेरे भाई ने कहा कि इन सारी चीजों को सामने रखकर कोई निर्णय लेना होगा ।

सोना और चांदी आज फारेन एक्सचेंज अर्निंग है, उनको हम अपने देश में किस तरह से रख सकते हैं, सम्भाल सकते हैं और उसकी ताकत बढ़ा सकते हैं, यह चीजें हम सबको देखनी हैं और उसके बाद कोई निर्णय लेना है । इसलिए यह सोने का सिक्का बनाया जाये या न बनाया जाये, इन सारी बातों को सामने रखकर इसको देखना है ।

इसके बाद मैं, अपने भाई विजेपकर जो हैदराबाद से आये हैं, हमारे विद्वान साथी हैं, जिन्होंने

इतिहास के पुराने पन्नों को हमारे सामने रखा है, उन्होंने गजनवी के जमाने से न मालूम किस जमाने तक की बातें हमारे सामने रखीं। मैं उनकी बड़ी आभारी हूं और उनको कहना चाहती हूं कि एक जमाने में, राजनीति में आने से पहिले मुझे भी इस चीज का शौक था और आज उन्होंने अपनी बातें कहकर उसको रिवाइव्ह कर दिया। इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि उनकी बातों पर गौर किया जायेगा और उनके सुझावों से लाभ उठाया जायेगा।

एक और सुझाव उन्होंने बहुत अच्छा दिया है कि हमारे एम० पीज० को हमारे देश के म्यूजियमों में जो सिक्के रखे हुए है उनको दिखलाया जाये। मैं इस चीज को देखूंगी और यथासम्भव इस चीज पर विचार किया जायेगा।

हमारे दूसरे भाई श्री गुणानन्द ठाकुर ने सिक्के के मामले को बाढ़ के साथ जोड़ दिया है। मैं उनकी व्यथा को समझ सकती हूं क्योंकि उन्होने जो करुणाजनक दृश्य बाढ़ के देखे हैं और उनके हृदय में जो उसका असर पड़ा है, शायद उसके कारण हो उन्होंने अपनी शिकायत व्यक्त की और अपने मन की बात कह दी कि इस सिक्के का दुरुपयोग न किया जाये और इसके द्वारा जनता को राहत पहुंचाई जाये। मैं उन्हें विश्वास दिलाना चाहती हूं कि हालांकि यह जो सिक्का बनेगा उससे बाढ़ में कोई राहत नहीं मिल पायेगी क्योंकि यह जो सिक्का बनाया जा रहा है, वह केवल विदेशों के लिए बनाया जा रहा है (It has a numismatic value) लेकिन इस अवसर पर मैं यह कह देना चाहती हूं कि हमारे सारे राज्यों में जहां पर भी इस तरह का भीषण प्रकृतिक का प्रकोप हुआ है, वहां पर सब तरह के राहत कार्य पूरी तत्परता के साथ किये जायेंगे। इस चीज के लिए सारे राज्य सतर्क है, केन्द्र सतर्क है, और इसमें दो राय नहीं है कि केन्द्र को इस तरह के बाढ़ग्रस्त राज्यों में राहत के कार्य करने चाहिये।

हमारे भाइयों ने दो एक चीजों के बारे में भी सुझाव दिया है कि इनका डिजाइन अच्छा नहीं है, इनका पालिश अच्छा नहीं है। शायद उन्होंने पंडित जी के सिक्के का नाम लिया था और कहा था कि शिकागो से ये सिक्के वापस आ गये।

श्री सिकन्दर अली वज्द : गान्धी जी के प्रूफ-कोईन के बारे में कहा था।

श्रीमती सुशीला रोहतगी : मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि इस तरह की कोई चीज हमारी नालेज में नहीं आई है। इस बारे में उनके मन में जो शंका है, वह बेबुनियाद है। मैं इसके बारे में फिगर्स कोट करना चाहती हूं और यह कहना चाहती हूं कि हमलोगों ने जो यह डिजाइन बनाया उसकी ख्याति अच्छी रही है और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उसका स्वागत हुआ है। इस तरह से हम देख रहे हैं कि हमारा फारेन एक्सचेंज दिन प्रति दिन ही बढ़ता जा रहा है और जाहिर है कि इसकी मांग बाहर के देशों में बढ़ती ही जा रही है।

अब यह सिक्का किस धातु का बनेगा, यह चीज तो ऐसी है जिस पर पूरा विचार किया जायेगा। यह सिक्का ऐसी धातु का हो जो धातु आसानी के साथ उपलब्ध हो और ऐसी धातु का हो जिसे हमें बाहर से न मंगाना पड़े। यह सिक्का ऐसी धातु का हो जिसको हम कंजर्व कर सकें। इसलिए इन सारी चीजों को ध्यान में रखकर हमें विचार करना होगा।

श्रीमती गान्धी के नाम पर भी कुछ किया जाये एसे सुझाव हमारे पास आये हैं। इन सुझावों के बारे में हमने कुछ सोच समझकर के यह निर्णय किया कि ऐसा करना आवश्यक नहीं है।

इसके साथ ही साथ उन्होंने कुछ और चीजें भी उठाई है। एक बात उन्होंने सिक्के में हिन्दी और अंग्रेजी में जो लिखा जाता है उसके बारे में कहा है। इस सम्बन्ध में मैं यह कहना चाहती हूं कि हमारे सिक्कों में हिन्दी में जो लिखा रहता है उसी का अनुवाद अंग्रेजी में लिखा रहता है। जैसे हिन्दी में "भारत" लिखा रहता है, तो उसकी जगह अंग्रेजी में "इंडिया" लिखा रहता है। अगर हिन्दी में "रुपया" लिखा रहता है, तो उसकी जगह अंग्रेजी में "रुपीज" लिखा रहता है।

[श्रीमती सुशीला रोहतगी]

दूसरी तरफ सिक्के में जहां अंग्रेजी में "प्लान्ड फैमिलिज", "फूड फार आल" है, उसकी जगह हिन्दी में "नियोजित परिवार, सबके लिए अनाज", यह लिखा रहता है । यह सिक्का केवल यहीं के लिए नहीं होता है बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी उसको जाना होता है, उसका प्रचलन करना होता है । हमारी भाषा तो उसमें होगी ही, लेकिन बाहर के लोगों को उसका अर्थ समझाने के लिए उस को अंग्रेजी में भी लिखा जाता है । इसलिए यह चीज रखी गई है ।

श्री सिकन्दर अली वज्द : बाहर के मुल्कों में तो दो जबानों में नहीं छपता । रूस में जापान में एक ही जबान में छपता है और दुनिया समझ जाती है ।

श्रीमती सुशीला रोहतगी : रूस की बात मैं ज्यादा नहीं जानती कि क्या कुछ वहां अंग्रेजी में छपता है, लेकिन मान्यवर, इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है । फिर भी आपने कहा है तो उनको देख लिया जायेगा । मतलब यही है कि जो चीज हमारी भाषा में है उसका अर्थ क्या है, उसके पीछे हम लोगों की अभिलाषा क्या है इसी को अनुवाद करके लोगों के समक्ष रखा जाता है ।

थीम्स बना कर रखे जाते हैं जो हम लोगों की मान्यताओं के आधार पर होते हैं । जिन चीजों को हम महत्व देते हैं, जिनको हम हाइ-लाइट करना चाहते हैं, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में लोगों के समक्ष रखना चाहते हैं, जैसे फूड फार आल, प्लान्ड फेमिली, ईक्वालिटि, Development, पीस—इनको कोइन्स में अंकित करते हैं जिससे सारे संसार का अटेंशन फोकस हो सके कि हम किन चीजों को महत्व देते हैं ।

कुछ प्रपोजल्स हमारे सामने हैं । 1975 में इन्टरनेशनल विमेन्स इयर के उपलक्ष्य में कमेमोरेटिव कोईन्स 50 रुपए का और 10 रुपए का निकालने का प्रपोजल है । प्रोजेक्ट टाइगर का भी एक विचार है । वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फन्ड का भी है जिसके लिए एक हजार रुपए, पांच सौ रुपए और 50 रुपए का कोइन होगा । ये किस धातु में बनेंगे, किस अनुपात में बनेंगे, यह हम लोगों के सामने है । एफ ए ओ का भी हम लोगों के सामने है । एक प्रपोजल रोम वगैरह का भी है । कई चीजें हम लोगों के सामने हैं । अभी कोई फैसला नहीं किया गया है इसलिए कहना मुश्किल होगा कि कितने रुपए के बनेंगे, कितनी संख्या में बनेंगे और उनमें धातु का कन्टेंट क्या होगा ।

महात्मा गांधी के प्रूफ कोइन्स के बारे में आपने जिक्र किया था जिसका सेल किया गया 112 रुपए 50 पैसे में न कि 200 रुपए में जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा था ।

श्री सिकन्दर अली वज्द : वे लिए गए या नहीं लिए गए ?

श्रीमती सुशीला रोहतगी : वे लिए गए । आपने दाम में अन्तर बताया था । इस लिये मैंने सोचा कि वह स्पष्ट कर दिया जाये ।

अभी आपने जिक्र किया था महात्मा गांधी के सिक्के के बारे में । वह बात हम लोगों के

In fact, an American firm recently requested for one thousand pieces of the Gandhi coin जो 10 रुपए की कोइन्स का आर्डर आया है उससे तो यह स्पष्ट हो जाता है उनकी बहुत डिमान्ड है ।

श्री सिकन्दर अली वज्द : मैंने यही कहा था कि गांधी के कोइन्स तो अच्छे बने थे लेकिन प्रूफ काइन्स जो सिलवर के बने थे वे वापस आए या नहीं । मैं पूरी डिटेल्स चाहता हूं ।

श्रीमती सुशीला रोहतगी : मैं आपको पूरी डिटेल्स दूंगी बाद में । जो मुझे इनफारमेशन है उसके मुताबिक ऐसे कोई कोइन नापसन्द नहीं किए गए, रिजेक्ट नहीं किए गए ।

कई सुझाव आपने दिए हैं, उनपर विचार किया जा सकता है । कोई भी फैसला लेने से

पहले डिपार्टमेंटल अंडरटेकिंग्स से भी स्केचेज आते हैं और जे जे स्कूल आफ आर्ट से भी मांगे जाते हैं । जब डिजाइन आ जाते हैं तो मिनिस्ट्री में बाकायदा स्क्रीनिंग की जाती है । बाद में फाइनेंस मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर अपना फैसला देते हैं । मतलब यह है कि हर पहलू पर गंभीरता से विचार होता है कि देश में और देश के बाहर इन चीजों के कारण कैसा असर पड़ेगा, अपने देश का स्वरूप वहां कैसा बनेगा ।

मान्यवर, इन सब बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जो कोइन बने हैं वे बढ़िया रहे हैं, उनका फेवरेबिल इम्पेक्ट रहा है, उनसे फारेन एक्सचेंज की अर्निंग बढ़ी है । इसको देखते हुए यह विधेयक लाया गया है । मैं सारे माननीय सदस्यों को धन्यवाद देती हूं जिन्होंने इस विधेयक पर अपने विचार प्रकट किए । उनके ज्ञान से मुझे भी लाभ हुआ है । मैं आशा करती हूं कि इसको वे सर्वसम्मति से पास करेंगे ।

डा० चंद्रमणि लाल चौधरी : क्या आप रेस्पेक्टेड पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम पर कोई नोट या सिक्का छापने का इरादा रखती हैं ?

श्रीमती सुशीला रोहतगी : मैं समझती हूं कि सबसे पहला जो सिक्का बनाया गया वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के ऊपर ही बनाया गया था। अगर मैं गलती नहीं करती हूं तो शायद 64 में ऐसा हुआ था ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : The question is :

'That the Bill further to amend the Indian Coinage Act, 1906, as passed by the Lok Sabha be taken into considera tion."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : We shall now Hike tip clause-by-clause consideration of the Bill.

Clauses 2 to 4 were added to the Bill.

Clause 1, *the Enacting Formula and the Title were added to the BUI.*

SHR1MATI SUSHILA ROHATGI : Sir, I move :

"That the Bill be passed."

The question was put and the motion was adopted.

MESSAGE FROM THE LOK SABHA

The Salaries and Allowances af Members of Parliament (Amendment) Bill, 1975

ADDITIONAL SECRETARY : Sir, 1 have to report to the House the following message received from the z Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha :

"In accordance with the provisions of Rule 96 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, I am directed to enclose herewith the Salaries and Allowances of Members of Parliament (Amendment) Bill, 1975, as passed by Lok Sabha at its sitting held on the 6th August, 1975.

Sir, I lay the Bill on the Table.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

The House adjourned at thirty-two minutes past three of the clock till eleven of the clock on Thursday, the 7th August, 1975.

MGIPRRND—32 RSS/75—Sec. I (Day)—11-9-75—595